अकादेमी सँ पुरस्कृत हिन्दी कविता-संग्रह

मगध

श्रीकान्त वर्मा

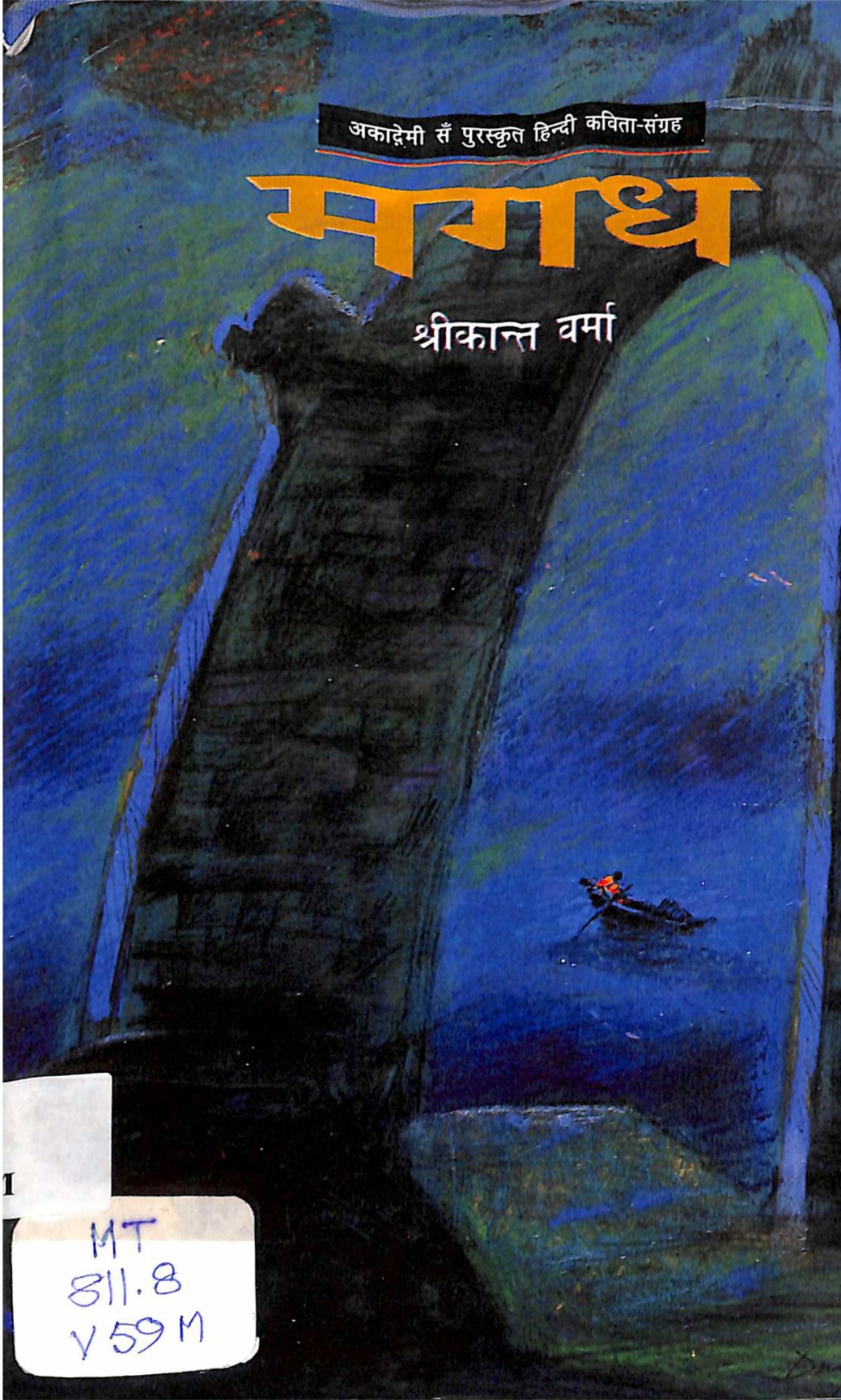

MT
811.8
V59M

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अम्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी माायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका-लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई०
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत हिन्दी काव्य-संग्रह

मगध

श्रीकांत वर्मा

अनुवादक

केदार कानन

साहित्य अकादेमी

MAGADH : Maithili translation by Kedar Kanan of Akademi's award-winning collection of poem in hindi by Shrikant Verma, Sahitya Akademi, New Delhi (1997) Rs.80

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण 1997

Library IIAS, Shimla
MT 811.8 V 59 M
00117083

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली-110 001

बिक्री कार्यालय :
स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली-110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल,
23ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता-700 053

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, मुम्बई-400 014

304-305, अन्ना सालई, तेनामपेट,
चेन्नई 600 018

ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे.सी. मार्ग,
बंगलौर-560 002

MT
811.8
V 59 M

ISBN 81-260-0302-2

117083
9.12.04

मूल्य : अस्सी टाका

मुद्रक : सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032

कोसल हमर कल्पना मे एकटा गणराज्य अछि
कोसल मे सुखी नहि अछि प्रजा
कियैक तँ कोसल मात्र कल्पना मे गणराज्य थिक

o o o

नागरिक दिन भरि गढ़ैत अछि खिस्सा
जे नहि गढ़ैत अछि खिस्सा
ओंघाइत अछि

o o o

नागरिक
कोसलक अतीत पर
होइत अछि पुलकित
जे पुलकित नहि होइत अछि
ओंघाइत अछि

कोसल हमर कल्पना मे गणराज्य अछि।

—संग्रहसँ एकटा कवितांश

क्रम

नान्दीपाठ	9
मगध	11
मगध क लोक	13
काशी मे शव	15
काशीक न्याय	17
कोसाम्बी	18
हस्तिनापुर	19
हस्तिनापुरक रेबाज	20
कपिलवस्तु	22
चिचिअबैत कपिलवस्तु	24
तक्षशिला	26
उज्जयिनी	27
उज्जयिनीक बाट	29
अवन्ती में अनाम	31
किंवदन्ती	33
कोनो आन अमरावती	35
नालन्दा	37
मिथिला कियैक नहि	39
मथुराक विलाप	41
वैशाली-1	43
वैशाली-2	45

कोसल गणराज्य	46
कोसल में विचारक कमी अछि	48
कोसलक शैली	50
श्रावस्ती	52
लिच्छवि	53
वसन्तसेना	55
अम्बपाली	57
अश्वरोही	59
आघात	60
आवागमन	63
मित्रक प्रश्न	66
छाहँ	67
हवन	69
बुद्धकालीन गणिकाक स्वप्न भंग	70
कृपा थिक, महाकालक	73
जड़ि	75
अन्तःपुर विलाप	77
जे युवा छल	79
मणिकर्णिकाक डोम	81
धर्मयुद्ध	83
गन्तव्यः चम्पा	85
कन्नौज जाइबलाक गनती	86
नियम	88
पाटलिपुत्र	90
कविताक जन्मदिन	92
हस्तक्षेप	93

सद्‌गति 95
शकटार 97
तेसर रस्ता 98
मायामृग 102
प्रमाण 104
आपसी 105
मोकाबिला 107
रोहिताश्व 109
देवाल पर नाम 111

नान्दीपाठ

गुनगाहक ! गुनसागर ! गुननिधान !
अनेक बर्खक बाद
हम अहाँक दुआरि आयल छी–

सुनू यजमान
जन्म-जन्मान्तरक कथा
नगर-नागरिक कव्यथा
अनने छी–

चिन्हलहुँ हमरा
वेताल–
हमरा
हमर कृत्य
कालक रूग्ण एकटा डारि
पर लटका देने
छल

गुनगाहक ! गुनसागर ! गुननिधान !
अहाँक दया सँ
हम नर-योनि
फेर धारण कयल

आब हमरा एकटा आरो वर दियऽ
जँ हम अहाँकें स्वर नहि दियऽ
अहाँ
हमरा स्वर दियऽ

1984

मगध

सुनू भाइ घोड़सवार, कोम्हर अछि मगध
मगध सँ
आयल छी
मगध
हमरा जयबाक अछि

कोम्हर घुमी
उत्तरक दक्षिण
वा पूबक पच्छिम
मे ?

लियऽ, वैह देखाब पड़ल मगध
लियऽ, ओ अदृश्य–

काल्हिए तँ हम मगध
छोड़ने रही
काल्हिए तँ कहने रही
मगधवासी सँ
नहि छोडू मगध
हम देने रही वचन–

सूर्योदयक पहिनहि
घुरि आयब

ने मगध छैक, ने मगध
अहूँ तँ ताकि रहल छी मगधे कें
बंधुलोकनि,
ई ओ मगध नहि
जकरा अहाँ पढ़ने छी
पोथी मे,
ई ओ मगध थिक
जकरा अहाँ
हमरे जकाँ गमा
चुकल छी

1979

मगध क लोक

मगध मे लोक
मृतक केर हड्डी चुनि रहल छथि

कोन अशोक क थिकनि ?
आ कोन चन्द्रगुप्तक ?
नहि, नहि
ई बिम्बिसारक नहि भऽ सकैछ
अजातशत्रुक थिक,

कहैत छथि मगध क लोक
आ नोर
बहबैत छथि

स्वाभाविक थिक

जे ककरो जीवित देखने हो
वैह तकरा
मृत देखैत अछि
जे जीवित नहि देखलक
मृत की देखत ?

काल्हुक बात थिक–
मगधवासी
अशोक कें देखने छल
कलिंग दिस जाइत
कलिंग सँ अबैत
चन्द्रगुप्त कें तक्षशिला दिस घोड़ा दौड़बैत
नोर बहबैत
बिम्बिसार कें
बाँहि थपथपबैत

मगधक लोक
देखने छल
आ ओ
बिसरि नहि सकल छथि
जे ओ सभ हुनका
देखने छलाह

जे आब
ताकलो सँ
देखाइ नहि पड़ैछ

1984

काशी मे शव

अहाँ देखने छी काशी ?
जतये, जाहि बाटेँ
जाइत अछि शव–
ओहि बाटेँ
अबैत अछि शव !

शव केर कोन !
शव आओत
शव जाओत–

पुछियौ तँ, ककर थिक ई शव ?
रोहिताश्व केर
नहि, नहि
प्रत्येक शव रोहिताश्व नहि भऽ सकैछ

जे होयत
दूर सँ चीन्हल जायत
दूर सँ नहि, तँ
लग सँ–
आ जँ लगहु सँ नहि,

तँ ओ
रोहिताश्व नहि भऽ सकैछ
आ जँ होयबो करत तँ
कोन अन्तर ?

मीत,
अहाँ तँ देखने छी काशी,
जतय, जाहि बाटेँ
जाइत अछि शव
ओहि बाटेँ
अबैत अछि शव !

अहाँ मात्र एतबे तँ कयल–
बाट देल
आ पूछल–
ककर थिक ई शव ?

जकर ककरो छल,
आ ककर नहि छल,
कोन अन्तर पड़ल ?

1984

काशीक न्याय

सभा बरखास्त भऽ गेल
सभासद चलथि

जे होयबाक छल से भेल
आब हम, मुँह कियैक लटकौने छी ?
कोन बेचैनी अछि ?
ककरा सँ डेरा रहल छी ?

फैसला हम नहि लेल–
माथ डोलयबाक माने फैसला लेब नहि होइछ
अहाँ तँ सोच-विचार धरि नहि कयल

बहस करयबला कयलक बहस
हम की कयलहुँ ?

हमर कोन दोख ?
ने हम सभा बजबैतं छी
ने फैसला सुनबैत छी
बर्ख मे एकबरे
काशी अबैत छी–
जे सभा बजयबाक सेहो आवश्यकता नहि
प्रत्येक व्यक्तिक फैसला
जन्मक पूर्वहि भऽ चुकल अछि

1984

कोसाम्बी

पूछि रहल अछि, वासवदत्ता
कोसाम्बीक
पहिने
की छल ?

वासवदत्ता !

कोसाम्बीक पहिने
मात्र
कोसाम्बी छल

कोसाम्बीक पछाति
मात्र
कोसाम्बी अछि

कोसाम्बीक बदला
मात्र
कोसाम्बी
भेटि सकैत अछि
कोसाम्बीक ठेकान पुछैत
वासवदत्ता
कोसाम्बी धरि
पहुँचि गेल अछि

1979

हस्तिनापुर

कने सोचियौ
ओहि व्यक्तिक विषय मे,
जे, हस्तिनापुर अबैत अछि
आ कहैत अछि
नहि, नहि, ई हस्तिनापुर नहि भऽ सकैछ।

कने सोचियौ
ओहि व्यक्तिक विषय मे
जे, एकसर भऽ गेल अछि–
कहियो लड़ल गेल होइ महाभारत, कोन अंतर पडैछ ?

संभव होइ
तँ सोचियौ
हस्तिनापुरक विषय मे,
जकरा लेल
थोड़-थोड़ अन्तंराल मे
लड़ल जा रहल अछि, महाभारत
आ ककरो अन्तर नहि पड़ैछ
ओहि व्यक्ति कें छोड़ि
जे अबैछ हस्तिनापुर
आ कहैत अछि,
नहि, नहि, ई हस्तिनापुर नहि भऽ सकैछ

1984

हस्तिनपुरक रेबाज

हम फेर कहैत छी
धर्म नहि रहत, तँ किछु नहि रहत–
मुदा हमर
क्यो नहि सुनैछ !
हस्तिनापुर मे सुनबाक रेबाज नहि छैक

जे सुनैत अछि
बहीर अछि वा
नहि सुनबाक लेल
नियुक्त कयल गेल अछि

हम फेर कहैत छी
धर्म नहि रहत, तँ किछु नहि रहत–
मुदा हमर
क्यो नहि सुनैछ

तखन सुनू वा नहि सुनू
हस्तिनापुरक निवासीलोकनि ! होशियार !
हस्तिनापुर मे

अहाँक एकटा शत्रु पालित भऽ रहल अछि, विचार–
आ मोन राखू
आइकाल्हि महामारी जहाँ पसरि जाइत अछि
विचार ।

1984

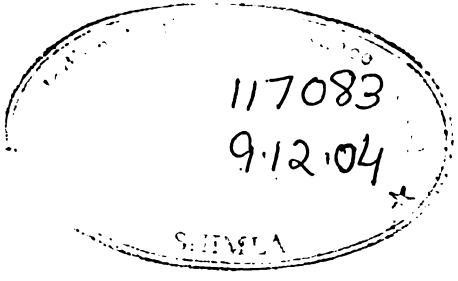

कपिलवस्तु

कपिलवस्तु मे दिन मे आँखि कडुआइत अछि
राति
रंगमहल मे डूबल रहि जाइत अछि

वृद्धकेँ वृद्ध होयबाक कारणेँ देश-निष्कासन भेटैछ
सीमा परं ठिठकि
कपिलवस्तु केँ देखि-देखि कऽ
ललचाइत अछि

कखनोँ-कखनो कनियाँ-बहुरिया
सपना देखैत
चिहुँकि जाइत छथि

कपिलवस्तु मे वृद्ध नहि छथि
मात्र
वृद्ध होयबाक डर अछि

कपिलवस्तु मे क्यो वृद्ध नहि होइ
युवा होयवाक
एतबे आशय अछि

कपिलवस्तु कें भेल बहुत दिन
नहि
भेल अछि

1979

चिचिअबैत कपिलवस्तु

महाराज ! घुरि चली–
उज्जयिनी पर शासनक इच्छा
हमरा बुझने
व्यर्थ थिक–

उज्जयिनी
नहि रहल उज्जयिनी–
ने न्याय होइछ
ने अन्याय

जेना कि,
मगध
नहि रहल मगध–
सभ हृष्ट पुष्ट छथि
क्यो रहल नहि
कृशकाय

ककरो मे दया नहि
ककरो मे
हया नहि
क्यो नहि सोचैंछ
जे सोचैछ
दोसर खेप नहि सोचैंछ

प्राय: येह स्थिति अछि काशीक–
काशी मे
शव क हिसाब भऽ रहल अछि
ककरो
जीवित लोक लेल पलखति नहि
जकरा छैक
तकरा जीवित आ मृत केर पहिचान नहि छनि !

मिथिला कें लिऔ–
काल्हुक बात थिक
राज्य करै छलाह विदेह
ओही मिथिला मे
शासन करैत अछि संदेह
ककरो धर्मक डर नहि–
विश्वामित्र, वशिष्ठ
क्यो नहि रहलाह–
महाराज ! सभ नश्वर छथि
क्यो अमर नहि।

जयबाके अछि तँ चलू कपिलवस्तु !
जे जाइत अछि कपिलवस्तु !
घुरिकें नहि अबैत अछि
जे नहि जाइछ कपिलवस्तु
जीवल गुदस्त करैत अछि
कपिलवस्तु ! कपिलवस्तु चिचिअबैत

1984

तक्षशिला

तक्षशिला मे देखाब दैत अछि सैनिक
एक्का-दुक्का
ककरा ताकि रहल अछि
गुम्म कियैक अछि

कियैक दुर्ग धरि जाकऽ
आपिस
आबि जाइछ
एक्का-दुक्का

देखि रहल अछि
अकबकायल
किछुओ नहि
बचल अछि

मात्र एकटा ढोंक
रहि-रहि कऽ
चिचिअबैत अछि
के रचने अछि
हमरा

1979

उज्जयिनी

कालिदास
कयने छलाह
जाहि गणिका सँ प्रेम
उज्जयिनी मे
कस्तूरी-सन
बसल
छलि
की सुयोग छल
उज्जयिनी छल
कालिदास छलाह
कस्तूरी छलि

कहियो-क़हियो
नक्षत्र योग सँ
भऽ जाइत अछि

आब ई ककरा
ताकि
रहल अछि
महाकाल सँ

पूछि
रहल अछि—

कस्तूरी-सन
बसल छलि
जे,
की
ई
तकरे नगरी थिक

कालिदास जाहि
गणिका सँ
कयने छलाह प्रेम
की
एहि बाटें
गेल छलि

रूकू, रूकू
ई
ककर
शव थिक
क्षिप्रा जकरा
बहा
अनलक
अछि

1979.

उज्जयिनीक बाट

उज्जयिनी जयबाक इच्छुक यात्री सँ निवेदन अछि:
ई बाट उज्जयिनी नहि जाइत अछि
आ ई जे यैह बाट जाइत अछि.उज्जयिनी

हम काल्हि धरि देखबैत छलुहँ बाट
ई कहि कऽ जे
सावधान ! ई बाट उज्जयिनी जाइत अछि
हम आइयो देखा रहल छी बाट.
ई कहि कऽ जे
सावधान ! ई वाट नहि जाइत अछि उज्जयिनी

यात्रीगण !
सत्य तँ ई थिक जे
प्रत्येक बाट जाइत अछि उज्जयिनी
आ ई
जे कोनो बाट उज्जयिनी नहि जाइत अछि

उज्जयिनी
निरन्तर जोहैत अछि बाट
उज्जयिनी
बाट सँ मुँह फेरि चुकल अछि

तँ फेर
जकरा उज्जयिनी जयबाक अछि, कतय जायत ?
ओ उज्जयिनी जाथि
आ कहथि
ई उज्जयिनी नहि
कियैक तँ हम
ओहि बाटें नहि आयल छी
जो उज्जायनी जाइत अछि
वा उज्जयिनी नहि जाइत अछि

1984

अवन्ती मे अनाम

की एहि सँ कोनो अन्तर पड़त
जँ हम कही
हम मगधक नहि
अवन्तीक थिकहुँ ?

अवश्ये पड़त
अहाँ अवन्तीक मनि लेल जायब
बिसरय पड़त मगध कें

आ अहाँ
मगध कें बिसरि नहि पायब
जीवन अवन्ती मे बितायब
तखनो अहाँ
अवन्ती कें जानि नहि पायब

तखन अहाँ दोहरायब
हम अवन्तीक नहि
मगध केर छी
आ क्यो नहि मानत
छिछिआयब–

'हम सत्त कहै छी
मगध केर छी
हम अवन्तीक नहि'

आ कोनो अंतर नहि पड़त
मगध केर
मानल नहि जायब
अवन्ती मे
चिन्हल नहि जायब

1984

किंवदन्ती

महोदय
सुनैत जाउ
हम आ अहाँ
जाहि पाटलिपुत्र लेल लड़ि रहल छी
आनक दृष्टि मे
ओ एक किंवदन्ती थिक

सुनलहुँ अहाँ ?

एहू जोगरक नहि
कि ओ एहि पर बेसीकाल टिकय
पूछैत अछि, ओ
कोन पाटलिपुत्र ?

महोदय ! अब अहीं दियौ
जवाब
बुझबियौ–
ई वैह पाटलिपुत्र थिक,
जकरा लेल
लड़ि रहल छथि

अजातशत्रु, बिम्बिसार,
चन्द्रगुप्त
हम आ अहाँ

बुझयलहुँ अहाँ ?

महोदय,
सुनलहुँ हुनक टिप्पणी ?
'मूर्ख
एकटा किंवदन्ती लेल लड़ि रहल छथि'

1984

कोनो आन अमरावती

महाराज
ई ओ अमरावती नहि
कोनो आन
अमरावती थिक

एकरा लेल क्यो लड़बाक हेतु तैयार नहि
क्यो नहि चिकरैछ
'दाओ पर लगा देल
हम स्वयं कें
अमरावतीक लेल'

क्यो नहि दैछ
मोंछ पर ताव,
'हमर थिक अमरावती'

महाराज
ई ओ अमरावती नहि
काल्हि धरि जे अहाँक छल

सबहक भऽ चुकल अछि

हटाओल जा चुकल अछि
स्मृतिशय्या,
नजरि नहि अबैछ गणिका
ने मंच रहल
ने नायक, ने नायिका

कृपासिन्धु !
बिसरि गेल जाउ अमरावती अपनेक छल,
जँ छलहो
तँ ओकरा लेल क्यो लड़वाक हेतु तैयार नहि

1984

नालन्दा

हम तँ तक्षशिला जा रहल छी,
अहाँ
कतय जा रहल छी ?

नालन्दा।

नहि,
ई बाट
कहियो
जाइत छल
नालन्दा
आब नहि ।

नालन्दा
बदलि देलक अछि
अपन बाट
आब एहि
बाटेँ
नालन्दा नहि

तक्षशिला
पहुँचव अहाँ
चलवाक अछि, तक्षशिला ?

नालन्दा जायवला मीत,
प्राय:
यैह होइत अछि
वताओल गेल
वाट
ओतय नहि जाइछ
जतय
हम पहुँचय चाहैत छी
जेना
नालन्दा।

1984

मिथिला कियैक नहि ?

चिन्तित नहि होथि राजन–
चिन्ता सँ काया कृश
होइछ;
आत्मा निस्तेज,
स्वर क्षीण !
चिन्ता नहि कयल जाउ–

इहो कोनो बात भेल
जे समग्र मिथिला मे
एकहु टा कवि नहि
जे सम्पूर्ण गणराज्य मे
कोनो मूर्त्तिकार नहि
जे सम्पूर्ण अछि मिथिला
मात्र गायक नहि

राजन !
गायक केर
होयब नहि होयब सँ
अन्तर नहि पड़ैछ–

अन्तर पड़ैछ सम्पत्ति सँ,
सेना सँ, मंत्रिपरिषद सँ !
देखऽ पड़ैछ
प्रजा सुखी अछि वा नहि ?

छथि तँ, अवन्ती मे
गायक, मूर्त्तिकार, कवि
की कऽ रहल छथि ?

राजन ! कहैत छैक
अवन्ती रचि रहल अछि
ई कहि कऽ
मृत्यु सँ बचि रहल अछि
जे प्रक्रिया समाप्त नहि होइछ
अवन्ती थिक, रहत अवन्ती !

राजन ! वात हमरा बुझबा मे
नहि आयल—
मिथिला कियैक नहि छल ?
मिथिला कियैक नहि अछि ?

1984

मथुराक विलाप

सुनि रहल छी मथुराक विलाप ?

यैह होइत अछि–

मथुराक नहि रहला पर
मथुरा विलाप करैत अछि
मथुरा ! मथुरा !

मथुरा मात्र एक उदाहरण थिक–
अवन्ती कें लियऽ।
ध्यान सँ सुनू–

सुनलहुँ अहाँ ?
रहि-रहि कऽ टनकैत अछि
अवन्ती ! अवन्ती !

हम कहलहुँ ने–
मथुराक नहि रहला पर मथुरा
अवन्तीक नहि रहला पर अवन्ती

विलाप करैत अछि लोक !

संभव थिक लोक के
कनवाक आदति पड़ि गेल हो
नगरक स्मृतिशेष भऽ गेला पर

मुदा–
मथुरा आ अवन्ती
स्मृति नहि थिक

आ जँ होयबो करय
की क्यो मानत
मथुरा आ अवन्ती
मात्र स्मृति थिक ।

1984

वैशाली-1

वैशाली केर लोक क जीह पर
मात्र एकटा नाम अछि-
आम्रपाली !

सुखी अछि आम्रपाली जे सभक्यो
ओकरा जनैत अछि
दुखी अछि आम्रपाली जे क्यो
ओकरा नहि जनैछ

जे जनैत अछि
आम्रपाली, आम्रपाली दोहरबैत
वैशाली अवैत अछि
शेष
वैशाली सँ कतराइत अछि

वैशालीक निवासी ! आम्रपाली
मात्र एकटा प्रसंग थिक–
जे दोसरा कें जंनैत अछि

आम्रपाली, आम्रपाली रटैत
वैशाली आओत

जकरा दोसराकेँ जानबाक इच्छा नहि—
आम्रपालीक पाछाँ
वैशाली सँ आँखि बचबैत
निकलि जायत

1984

वैशाली-2

हम होयब, वैशाली होयत
हम नहि होयब ?
वैशाली होयत।

वैशाली नगर नहि
स्मृति थिक
हुनक,
जे हमरा सँ पहिने आयल छलाह–

कहैत छलाह जे
हम होयब, वैशाली होयत
हम नहि होयब ?
वैशाली होयत।

1984

कोसल गणराज्य

कोसल हमर कल्पना मे एकटा गणराज्य अछि
कोसल मे सुखी नहि अछि प्रजा
कियैक तँ कोसल मात्र कल्पना मे गणराज्य थिक

नागरिक
दिन भरि खेलैत अछि जुआ
जे नहि खेलैत अछि जुआ
ओंघाइत अछि

नागरिक
दिन भरि गढ़ैत अछि खिस्सा
जे नहि गढ़ैत अछि खिस्सा
ओंघाइत अछि

नागरिक
दिन भरि खौंझाइत अछि
जे नहि खैंझाइत अछि
ओंघाइत अछि

नागरिक

कोसलक अतीत पर

होइत अछि पुलकित

जे पुलकित नहि होइत अछि

ओंघाइत अछि

कोसल हमर कल्पना मे गणराज्य अछि

1984

कोसल मे विचारक कमी अछि

बधाइ हो महाराज ! महाराजक जय हो।
युद्ध नहि भेल–
घुरि गेल शत्रु।

ओना पूर्ण छल हमर तैयारी !
चारि अक्षौहिणी छल सेना,
दस-सहस्र अश्व,
लगभग एतबे हाथी।

कोनो कसरि नहि छल !

जँ युद्ध होइत तँ
परिणाम यैह होइत ।

ने हुनका लग अस्त्र छल,
ने अश्व,
ने हाथी,
युद्ध होयबो कोना करैत ?
निहत्था छलाह ओ।

हुनका मे सँ प्रत्येक एकसर छलाह
आ प्रत्येक ई कहैत छलाह
होइत अछि एकसर प्रत्येक !

जे होइ,
ई जय अहाँक थिक !
बधाइ हो !
पूर्ण भेल राजसूय,
अहाँ भेलहुँ चक्रवर्त्ती–

ओ मात्र किछु प्रश्न छोड़ि गेलाह अछि
जेना कि ई–

टिक नहि पाओत बेसी दिन कोसल
कोसल मे विचारक कमी अछि !

1984

कोसलक शैली

बाहर तँ बहराउ, महाराज, बाहर
अहाँक कीर्त्ति
चन्द्रिका जकाँ
प्रस्फुटित अछि
सभ सुखी अछि
क्यो नहि कहैत अछि जे
हमरा किछु कहबाक अछि

किछु भेल अछि
क्यो
किछुओ नहि कहैत अछि
सहमल रहैत अछि
कहबाक नाम पर
एतबा कहैत अछि—
हम सुखी छी

महाराज, क्यो बिनु कहने
कोना,
रहि सकैत अछि सुखी
सोचलहुँ अछि अपने ?

ओना तँ कीर्त्ति महाराजक

चन्द्रिका जकाँ प्रस्फुटित अछि
कहबाक लेल
भइयो की सकैत अछि ?

एतेक अबस्स कहब
जे सोचैत अछि
बकैत अछि
ओकर बकब
शैली बनि जाइत अछि
दुख अछि
कोसलक एखनधरि
एखनधरि
शैली नहि बनि पाओल

जे होइ,
अहाँ तँ बहराउ बाहर
भीड़
कहि रहल अछि समवेत–
सुखी छी
हम !

महाराज,
जतेक ओ कहैत अछि
अहूँ
कहियौ ओतबे
'प्रजाजन !
सुखी रहू'

1984

श्रावस्ती

चलि गेलाह जे श्रावस्ती कें छोड़ि
घुरथि ओ–

आबहु अबैत अछि भिक्षुक
दोहरबैत अछि
दुख सँ डरि कऽ
चलि गेलाह जे
दुख पओताह

जे अबैत अछि
दुख पबैत अछि
जे जाइत अछि
दुख पबैत अछि

कोसल मे ओतबे दुख
जतबे
श्रावस्ती मे अछि

श्रावस्ती छोड़ि कोसल मे बसऽ बला
घुरथि–
बाजऽ चाहि रहल अछि श्रावस्ती
बाजि नहि पबैत अछि

1979

लिच्छवि

लिच्छवि चलि गेलाह लिच्छवि औताह फेर

रौनक होयत महल मे
अन्त:पुर मे
चूड़ी खनकत फेर

हाट लागत
डाक होयत
भिक्षा होयत
भिक्षुक होयत
इच्छा होयत
इच्छुक होयत

तखन विधवा कियैक उदास छथि ?
वैशाली मे निस्तब्धता कियैक ?

सत्य तँ ई थिक लिच्छवि नहिं औताह कहियो

अयबो करताह तँ
दौहरौताह
हम लिच्छवि छलहुँ, हम लिच्छवि छी
कहैत
गुजरि जयताह

लिच्छवि कहियो-कहियो होइत छथि
तेँ लिच्छवि होइत छथि

1979

वसन्तसेना

सिरही नहि रहल अछि
वसन्तसेना

एखन नहि बूझब अहाँ
वसन्तसेना
एखन युवा छी अहाँ

सिरही समाप्त नहि
होइछ
उन्नतिक हो
वा
अवनतिक

आगमनक हो
वा
प्रस्थानक
वा
अवसानक
वा
अभिमानकं

एखन अहाँ नहि
बूझब
वसन्तसेना

ने सिरही
चढ़ब
हल्लुक अछि
ने
सिरही
उतरब
जाहि सिरही पर
चढ़ैत छी, हम,
ओहि सिरही सँ
उतरैत छी, हम
निर्लिप्त अछि सिरही,

के चढ़ि रहल अछि
के उतरि रहल अछि
चढैत उतरि रहल
वा
उतरैत चढ़ि रहल अछि
कतेक चढ़ि गेल छी
कतेक उतरबाक अछि

सिरही ने गनैत अछि
ने सुनैत अछि

वसन्तसेना।

1984

अम्बपाली

सूतल पड़ल अछि, वैशाली
जागि रहल अछि
मात्र,
अम्बपाली

अन्हार अछि
कोनो दोसर दुनिया मे
कमश:
होइत
भोर अछि

नक्षत्र झरैत अछि

वैशाली मे लोक
जन्मैत अछि
मरैत अछि

सूतल अछि वैशाली

वा
मरि गेल अछि
अम्बपाली
सपना मे
डेरा गेल अछि

डरू नहि अम्बपाली !

1979

अश्वरोही

अश्वरोही
जे जाइत अछि कलिंग
की ओ कलिंग सँ अबैत अछि ओहिनाक ओहिना ?

की कहैत अछि, लोक–
विजयी
वा हत्यारा ?

की स्वागत
करैत अछि
कनियाँ-वहुरिया

वा
भटकैत अछि एम्हर-ओम्हर ?

की होइत अछि ?

अश्वरोही
ई बाट कोम्हर जाइत अछि ?

1979

.ात

पूर्णिमा छल।
चन्द्रमा छल।
दर्पण छल।

दर्पण पर
ऐनमेन
चन्द्रमा-सन छल
चन्द्रमाक
छवि।

बड़ीकाल धरि
रूकलाक बाद
घसकैत
चन्द्रमा
चौखटि सँ
बाहर
जा चुकल
छल।

हम कहलहुँ,
कतेक
निस्तब्धता अछि !

तखने ओ
देखाब पड़ल
दर्पण
मे–

एहि सँ पहिने जे
हम
पुछियैक
के थिकहुँ अहाँ ?
ओ
गायब
भऽ
चुकल छलि।

अनेक बर्खक बाद
स्मरण करैत
ओहि
दिनक
घटना
चमकल–
अरे । ओ
पद्मिनी छलि।

'तँ तँ,
हम कहलहुँ,
'तँ तँ
आघात मे
दुनू
टूटि गेल छी
दर्पण
आ
हम।'

1984

आवागमन

जहिया ओ गुजरल
कोसल सँ मगध
मगध सँ कोसल
अबैत
सभ ओकरा सँ एतबे पुछलक–

मगध सँ कोसल
जा रहल छी
वा कोसल सँ
मगध आबि रहल छी ?

की अंतर पड़त,
ई कहि कऽ
ओ
टारय चाहलक प्रश्नकेँ।

मुदा किछु
प्रश्नकेँ
टारल नहि जा सकैछ–
बेसीकाल तखन जखन

रहा रहाँ गुजरैत होइ हम
कोसल सँ होइत मगध
मगध सँ होइत कोसल।

सबमे अहम् थिक ई प्रश्न
कतय जा रहल छी ?

कोसल आ मगध मे
ककरा
ताकि रहल छी ?

आ ई जे
कोसल
पहिने आओत
वा मगध ?
सत्य तँ ई थिक जे
क्यो नहि जनैछ
ओ बेर-बेर मगध सँ कोसल
कोसल सँ मगध कियैक जाइत अछि ?

कियैक दृश्यकेँ दोहरबैत अछि ?

कियैक
मगध सँ गुजरैत
कोसलक पक्ष मे,
कोसल सँ गुजरैत

मगध का विपक्ष मे
नारा लगबैत अछि ?
कियैक,
कोसलक टूटल दुर्ग पर
मगधक
फाटल झंडा
फहरबैत अछि ?

जखन कोम्हरो सँ कोनो
जवाब नहि भेटैछ
तखन ओहो
ओकरे मे मिझरा जाइत अछि
जे अबैत-जाइत कें पकड़ैत
आ पूछैत अछि–

कोसल सँ होइत
मगध जा रहल छी
वा
मगध सँ होइत
कोसल ?

1984

मित्रक प्रश्न

मित्र,
ई कहब कोनो अर्थ नहि रखैछ
कि हम घुरि रहल छी।

प्रश्न ई थिक जे अहाँ कोम्हर जा रहल छी ?

मित्र,
ई कहबाक कोनो माने नहि
कि हम समयक संग चलि रहल छी।

प्रश्न ई थिक जे समय अहाँकें बदलि रहल अछि
वा अहाँ
समयकें बदलि रहल छी ?

मित्र,
ई कहब कोनो अर्थ नहि रखैछ,
कि हम घर आबि गेलहुँ।

प्रश्न ई थिक
जे एकर पछाति कतय जायब. ?

1984

छाँह

अनेक बरखक पछाति ज्ञात भेल
जे
संग छलि,
छाँह नहि छलि

हम लतखुर्दनि कयल
कुहरलि
बजाओल
लजायलि
डपटल
छाबा सँ
लपटि गेलि
कहल
पाछाँ छोडू
ठिठकि गेलि

हम बढ़ि कें जगह लेल
भरल सभा मे
लग

बैसि
गेलि

सभा
उठि चुकल
मंडली
कूच कऽ चुकल अछि
एखनो जे संग अछि
छाँह नहि भऽ सकैछ

1979

हवन

चाहितहुँ तँ बचि सकैत छलहुँ
मुदा कोना बचि सकैत छलहुँ
जे बचत
कोना रचत

पहिने हम झुलसलहुँ
फेर धधकलहुँ
चनकय लगलहुँ

कुहरि सकैत छलहुँ
मुदा कोना कुहरि सकैत छलहुँ
जे कुहरत
कोना निमाहत

ने ई बलिदान छल
ने ई उत्सर्ग छल
ने ई आत्मपीड़न छल
ने ई सजाय छल
तखन की छल ई

ककरो माथ थोपि सकैत छलहुँ
मुदा कोना थोपि सकैत छलहुँ
जे थोपत कोना गढ़त

1979

बुद्धकालीन गणिकाक स्वप्न-भंग

हाथ फेरिते ठनकैत अछि
स्तन

नाभि सँ उठैत अछि, सुगन्ध

जाँघ पर
होइत छै सवार
केवल वलिष्ठ
उतारैत छै
नदी मे अश्व

ताकय अबैछ सुख अथाह
सेनापति
युवराज।

मूर्छित होइछ, केवल वामा !

मालती,
काल्हि एना नहि होयत
पीजु मे
भरल होयत

स्तन,
जांघ
स्मारक कहाँ
टूटल पड़ल होयत

मात्र आहटि
सुनि सकब–
के ?
सेनापति ?
वा युवराज ?

सुखा गेल रहत
नदी सुख केर

ठट्ठा करत ओ
काल्हिधरि जे उतारैत छल
अश्व ?
अहूँ हँसब।

शवकेँ नदी सँ निकालि
छोड़ि जाइछ लोक
घाट पर
आ कहैछ–
ई थिक काल

मालतीकेँ क्यो नहि देखलाक।

फेरिते हाथ,
ठनकैत छल,
स्तन।

जांघ पर बलिष्ठ
होइत छल
सवार।

ताकय अबैत छल
अथाह सुख
युवराज।

मूर्छित होइत छलि
वामा।

कोन विडम्बना थिक
मालती
काल्हियो अहाँ
मालती।

1984

कृपा थिक, महाकालक

अदहा कनैत अछि, अदहा हँसैत अछि
दुनू अवन्ती मे बसैत अछि

कृपा थिक महाकालक

अदहा ई मानैत अछि, अदहा
होयव ओतबे
सार्थक थिक, जतबा पूर्ण होयब

अदहाक दावा अछि, ओतबे
निरर्थक थिक पूर्ण
होयब, जतेक अदहा होयब

अदहा निरूत्तर अछि, अदहा बहसैत अछि
दुनू अवन्ती मे बसैत अछि

कृपा थिक महाकालक

अदहा कहैत छैक अवन्ती
ओहिना अदहा अछि
जेना कांशी,

अदहाक कहब थिक
दुनू मे रहैछ
केवल प्रवासी

दुनू तर्कजालमे फंसैत अछि
दुनू अवन्ती मे बसैत अछि

हँसैत छथि
काशीक पंडित अवन्तीक ज्ञान पर
अवन्तीक लोक काशीक अनुमान पर

कृपा थिक, महाकालक

1984

जड़ि

चुप कियैक छी, मित्रलोकन ?

की भलैकं मगध मे ?

महाराज नहि रहलाह ?
वा महारानी फेर कन्या जन्म देलनि ?

की युद्धक घोषणा भेलै फेर ?
की निषेधाज्ञा जारी भेलै फेर ?

की भेलै ?
चुप कियैक छी ?

की काज नहि अयलै, जहर मोहरा ?
की मगध मे क्यो नहि रहल ?

कखनो-कखनो,
नहि जानि की भऽ जाइत छैक मगध कें

सबकिछु सामान्य भेलाक बादो
ने क्यो बजैत अछि
ने मुँह खोलैत अछि

केवल शकटार
जड़िकेँ छुबि
गाछक कल्पना करैत अछि
सोचि कऽ सिहरैत अछि

मित्र,
जे सोचत
से सिहरत

1984

अन्त:पुरक विलाप

कियैक अछि विलाप अन्त:पुर मे ?

पूछियौ
ज्ञात करू
जानय चाहैत छथि
महाराज–

जखन
चारूभर
फुलझड़ी छूटैत हो,
हर्ष केर
प्रत्येक
सोचि रहल हो
अपन
उत्कर्ष केर,

सन्ताप कियैक ?

जखन
सभ

कहि रहल हो
ठीक
भेलै

पश्चात्ताप कियैक ?

जखन
सभ
ढँगसँ
रहैत हो

जखन
सभ
सोचि-बिचारि
कहैत हो,

प्रलाप कियैक ?

ज्ञात करू।

1984

जे युवा छल

घुरिकऽ सभ आओत
मात्र ओ नहि
जे युवा छल–
युवावस्था घुरि कँ नहि अबैछ।

जँ अयबो कयल तँ
सैह नहि रहत।

पाकल केश, झुर्री
थोड़ेक,
थकान
ओ बूढ़ भऽ चुकल होयत ।

बाट मे
लोकक बूढ़ भऽ जायब
स्वाभाविक थिक–
बाट सुगम होइ वा दुर्गम

क्यो कियैक चाहत
बूढ़ कहायब ?

क्यो कियैक अपन
पाकल केश
गनत ?

क्यो कियैक
चेहराक घोकचल चाम देखि
चौंकय चाहत ?

क्यो कियैक चाहत
कहय क्यो ओकरा
लोक कतेक शीघ्र भऽ जाइत अछि बूढ़ा–
अपनहि देखू ने !

क्यो कियैक चाहत
जे ओ
जरा, मरण आ थकानक उदाहरण बनय।

घुरि कऽ सभ आओत
मात्र ओ नहि
जे युवा छल।

1984

मणिकर्णिकाक डोम

मणिकर्णिका सँ रहरहां कहैत अछि डोम
दुखी नहि होइ
मणिकर्णिका,
दुख शोभा नहि दैत अछि अहाँकेँ
एहनो श्मशान छैक
जतय एकहु टा शव नहि अबैत अछि
अबितो अछि
तँ गंगा मे
नहाओल नहि जाइत अछि

डोम एकरा अलावे कहियो
की सकैत अछि,
एकटा एकसर
डोमे तँ अछि जे
एकसर मणिकर्णिका मे
रहि सकैत अछि

दुखी नहि होइ, मणिकर्णिका,
दुख मणिकर्णिकाक
विधान मे नहि

दुख ओकरा होइछ
जे पहुँचाबय अबैत अछि
दुख ओकरा छल
जकरा छोड़ि ओ चलि जाइत अछि

भाग्यशाली थिक, ओ
जे लदि कऽ वा लादि कऽ
काशी अबैत अछि
दुख
मणिकर्णिका कें सौंपि जाइत अछि

दुखी नहि होइ
मणिकर्णिका,
दुख हमरा शोभा नहि दैछ

एहनो डोम अछि
बाट जोहैत शव केर
जकर पथरा जाइत अछि आँखि–
शव नहि अबैत अछि–

एकरा अलावे डोम
कहियो की सकैत अछि !

1984

धर्मयुद्ध

कोना संभव अछि
दुनू दिस मृतक केर संख्या एकरंग होइ

कोना संभव अछि
एक केर पताका खसय
तँ दोसरोक खसय
एक पक्ष मे
जतेक विधवा होइ
दोसरो मे
सधवा
ओकरा सँ बेसी नहि होइ

कोना संभव अछि
एकटा राजधानी मे जतेक विलाप होइ
दोसरो मे
ओतबे
संताप होइ

दुनू दिस
पश्चाताप होइ
दुनू दिस
धर्म होइ

दुनू दिस
लाज होइ
दुनू पक्ष
राखि देअय हथियार
दुनू विजेता होइ

हम कहैत छी
ई संभव नहि थिक

एकतरफा होइछ हत्या
एकतरफा जय

एकतरफा दर्प
एकतरफा भय

एकतरफा विधवा
एकतरफा सधवा

एकतरफा होइछ विलाप
एकतरफा संताप

एकतरफा हर्ष
एकतरफा पश्चात्ताप

एकतरफा होइछ धर्म
एकतरफा लाज

दुनू दिस मृतक केर संख्या
एकरंग नहि होइछ

1984

गन्तव्य : चम्पा

हमरा मात्र चम्पा धरि जयबाक अछि

ई बाट मात्र चम्पा धरि जाइत अछि
जनिका आर कतहु जयबाक छनि
दोसर कोनो बाट सँ जाथि
हम चम्पा जाइबला कें
ई कहि कऽ नहि भटकाबी
की ई बाट चम्पा धरि जाइत अछि ?

जनिका चम्पा जयबाक छनि
हुनका किछुओ पुछबाक अधिकार नहि–
ने ई जे चम्पा कतय अछि ?
ने ई जे चम्पा कतय नहि अछि ?
ने ई जे की चम्पा अछि ?
ने ई जे की ई सही थिक
जे चम्पा छल, चम्पा नहि अछि ?

हमरा मात्र चम्पा धरि जयबाक अछि

1984

कन्नौज जाइबलाक गनती

भाइ आ बहिन, अहाँ कतय जा रहल छी ?
हमसभ
कन्नौज जा रहल छी,
कियैक तँ सभक्यो
कन्नौज जा रहल अछि

जे कतहु नहि जाइछ,
कन्नौज जा रहल अछि,
जे कतहु-कतहु जाइत
अछि, कन्नौज जा रहल अछि,

जकरा प्रेम छैक कन्नौज सँ
कन्नौज जा रहल अछि,
जकरा द्वेष छैक कन्नौज सँ
कन्नौज जा रहल अछि

जे कन्नौज विषय मे
किछु नहिं जनैत अछि

कन्नौज जा रहल अछि,
जे कन्नौजक विषय मे
सभकिछु जनैत अछि,
कन्नौज जा रहल अछि,

के अछि जे, कन्नौज नहि जा रहल अछि ?

1984

नियम

हम फेर कहैत छी, महाराज–
नहि कहल जाय,
'बदलल नहि जा सकैछ नियम।
जे दोसरा पर लागू होइछ
हमरो पर होयत।'

सभा कें निरूत्तर करबाक
आरो उपाय अछि–
सत्य जरूरी नहि
सत्यक एहन अपव्यय
उचित नहि–

निरूत्तरे करबाक अछि सभाकें
तँ कहल जाय
'तोड़ल नहि जा सकैछ
नियम
बदलल जा सकैत अछि।'

कहल जाय...
'हम

नियम नहि तोड़ैत छी
आने जकाँ
नियम सँ डरैत छी
कखनो-कखनो देह
जँ कसय लगैछ,
नागरिक। तखन हम
नियम मे
संशोधन करैत छी—
नियममे ढिलाइ कयल जा सकैत अछि।'

1984

पाटलिपुत्र

माथ पर रक्त केर टीका अछि
राज्याभिषेक केर
यैह तरीका अछि
ककर थिक ई रक्त
ओकर तँ नहि जे मगध केर
दुलरूआ थिक

ककरो होइ
रक्त
की
अन्तर
पड़ैत अछि ?
तारो तँ
कखनो-कखनो
आँखि
मे
गड़ैत अछि

मौर्य अपशकुन नहि
देखैछ
मौर्य कें
विजय सँ
सम्बन्ध अछि

तक्षशिला आ नालन्दाक मध्य
मौर्य
छथि
आ
बाट अछि

पतक्का
फहरा
रहल
अछि

दोष
मात्र
मौर्य
केर
नहि

पहिनहुँ तँ
पंडितलोकनि
कहने छथि–

पाटलिपुत्र मे
राति
गहरा
रहल
अछि

1979

कविताक जन्मदिन

जे लिखलहुँ, व्यर्थ छल
जे नहि लिखलहुँ,
अनर्थ छल

1984

हस्तक्षेप

क्यो छीकैत धरि नहि अछि
एहि भय सँ
जे मगध केर शांति
भंग नहि भऽ जाय,
मगधकेँ बनौने रखबाक अछि, तँ
मगध मे शांति
रहबाके चाही

मगध अछि, तँ शांति अछि

क्यो चिचिअबैत धरि नहि अछि
एहि भय सँ
जे मगधक व्यवस्था मे
दखल नहि पड़ि जाय
मगध मे व्यवस्था रहबाके चाही

मगध मे नहि रहल
तँ कतय रहत ?

की कहत लोक ?

लोकक की ?
लोक तँ इहो कहैत अछि
मगध आव कहय टा लेल मगध अछि
रहय लेल नहि

क्यो टोकैत धरि नहि अछि
एहि भय सँ
जे मगध मे
टोकबाक रेबाज नहि बनि जाय

एकबेर आरम्भ भेला पर
कतहु नहि रूकैछ हस्तक्षेप–
ओना मगधवासी
कतबो कतरायव
बचि नहि सकै छी अहाँ हस्तक्षेप सँ–

जखान क्यो नहि करैछ
तखन नगरक मध्य सँ गुजरैत
मुरदा
एहि प्रश्न संग हस्तक्षेप करैत अछि–
मनुक्ख कियैक मरैत अछि ?

1984

सद्‌गति

हमरा जयबाक अछि काशी,
कहैत छी
कोसल जा रहल छी

की राखल अछि काशी मे—
मणिकर्णिका अछि
मुरदा अबैत अछि
मुरदा जाइत अछि

हमरा नहि जयबाक अछि काशी

हमरा जयबाक अछि काशी

कहैत छी
अभागल थिक ओ जे
जाइत अछि काशी
कोसल नहि जाइत अछि

अहाँ देखने छी कोसल
तँ चलू
हम कोसल जा रहल छी

कोसल
आ काशी मे
अन्तर अछि–
कोसल काशी नहि थिक

हम मरय चाहैत छी
कोसल मे
कहैत छी–

धन्य छथि ओ, जनिका
काशी मे
भेटैत अछि सद्गति

1984

शकटार

शकटार ! शकटार !
नहि अछि शकटार
निकलि गेल अछि तक्षशिला दिस साइत ।

शकटार ! शकटार !
नहि अछि शकटार
घुरि गेल अछि मगध साइत।

शकटार ! शकटार !
ने मगध मे अछि शकटार, ने तक्षशिला मे।
शकटार कतहु नहि भेटत अहाँ के।

शकटार तखने अबैछ
जखन चन्द्रगुप्त अबैत अछि !

हत्या करैत अछि शकटार
चन्द्रगुप्त गरा लगबैत अछि
कखनो-कखनो हत्या करैत अछि चन्द्रगुप्त
शकटार शीश नमबैत अछि

ने मगध मे अछि शकटार, ने तक्षशिला मे।

1984

तेसर रस्ता

हल्ला अछि मगध मे जे मगध मे नहि रहलाह शासक
जे छलाह
ओ मदिरा, प्रमाद आ आलस्यक कारणें
एहि लायक
रहलाह नहि
जे हुनका हम
कहि सकियनि मगध केर शासक

लगभग एहने हल्ला अछि
अवन्ती मे
यैह कोसल मे
यैह
विदर्भ मे
जे शासक नहि
रहलाह

जे छलाह
तनिका मदिरा, प्रमाद आ आलस्य
एहि
लायक नहि
रखलक

जे हुनका कहि सकियनि शासक अपन

नखन की करी हमसभ ?

शासक नहि रहत
तँ कानून नहि होयत

कानून नहि होयत
तँ व्यवस्था नहि होयत

व्यवस्था नहि होयत
तँ धर्म नहि होयत

धर्म नहि होयत
तँ समाज नहि होयत

समाज नहि होयत
तँ व्यक्ति नहि होयत

व्यक्ति नहि होयत
तँ हमसभ नहि होयब

की करी हमसभ ?

तोड़ि दी कानून ?

छोड़ि दी धर्म

भंग कऽ दी व्यवस्था ?

मित्रलोकनि–
दुइए टा
रस्ता अछि
दुर्नीति पर चली
नीति पर बहस
बनौने राखी

दुराचरण करी
सदाचारक
चर्चा चलौने राखी

असत्य कहियै
असत्य करियै
असत्य जीबियै–

सत्यक लेल
मरि मेटयबाक आन नहि छोड़ियैक

अन्त मे,
प्राण तँ
सभ छौड़ैत अछि
व्यर्थक लेल
हम

प्राण नहि छोड़ियैक

मित्रलोकनि,
तेसरो रस्ता
अछि–
मुदा ओ
मगध,
अवन्ती
कोसल
वा
विदर्भ
होइत नहि
जाइत अछि।

1984

मायामृग

जखन हम युवा रही
कोनो बूढ़ देखा जाइत छल
लाठी टेकि
सड़क पार करैत
छाती पकड़ने

मंगैत छलहुँ हम
अपना लेल आशीष
ईश्वर !
बुढ़ारी सँ पहिने
उठा लेब हमरा

बूढ़ भऽ गेल छी हम
लाठी पकड़ैत
सड़क पार करैत
छाती पकड़ने

मंगैत छी आशीष–

एखन नहि !

पार तँ करय दिअ ऽ

रस्ता

सुनू भाइ बटोही

लिअऽ,

पकड़ि लिअऽ

हमर हाथ–

कने रस्ता

पार करा दिअऽ

1984

प्रमाण

वालु पर छोड़ि अपन पदचिह्न
पूछैत अछि दोसर दिन, लोक–
कतय गेल
प्रमाण यात्रा केर ?

जनैत छी
की उत्तर भेटैत छनि
हुनका ?

वन्धु, जाउ,
जतय
नहि अछि वालु

वालु पर
टिकैत नहि छैक
ककरो निशान ।

1984

आपसी

हम ओकरा एहि बाटें
जाइत देखने रही:

एकसर नहि छलै ओ,
सेना छलै
हाथी छलै
घोड़ा छलै
रथ छलै
वाद्य छलै–
तामझाम छलै।

तकरा सभक मध्य
एकटा घोड़ा पर सवार
शांत
ओ
एना गुजरि रहल छल,
जेना वागडोर
ओकरे हाथ होइ,
सभ
केवल अनुगमन
कऽ रहल होइ।

बीस बर्खक बाद
हम ओकरा एहि बाटेँ
अबैत देखि
रहल छी।

एकसर नहि अछि ओ,
सेना छैक,
हाथी छैक,
घोड़ा क,
रथ छैक
वाद्य छैक,
तामझाम छैक।

तकरा सभक मध्य
एकटा घोड़ा पर सवार
शांत
ओ
एना गुजरि रहल अछि
जेना बागडोर
ककरो आनक
हाथ मे होइ,
ओ
केवल अनुगमन
कऽ रहल होइ।

1984

मोकाबिला

ककर छांह देखि हम धारमे
चौंकैत छी,
चिचिअबैत छी :
नहि, ई सत्य नहि थिक

मुदा ई सत्य थिक

हम
मात्र अपनहिकेँ दऽ सकै छी सांत्वना :
भ्रांति छल
ने ई धार थिक,
ने ई ओ थिक,
जकरा देखि
चौंकैत छी, हम।

धार सँ हम
बचि नहि सकै छी।

धार सपनामे
आओत
याद दिआओत

चौंकब
अहाँ
चिचिआयब :
यैह थिक, ओ,
जकरा सँ बचि निकलला पर,
हम कहैत छलहुँ,
धन्यवाद !

1984

रोहिताश्व

जखन कहियो मणिकर्णिका जायव
एकटा वृद्धकेँ
कोनमे नुकायल देखबै।

अहाँकेँ देखि
ओकर आँखिमे
किछु
चमकत—

ओ
रोहिताश्व, रोहिताश्व
हिचकैत
अहाँ सँ लपटि जायत।

तखन की करबै ?

यैह ने :
'हम रोहिताश्व नहि छी
हम ठीके
रोहिताश्व
नहि थिकहुँ।'

मुदा अहाँ ओहि वृद्धकेँ
कोना
दिअयबै विश्वास
जे अहाँ
रोहिताश्व नहि थिकहुँ

अहाँ पर कोर पकड़
आरो गसिया जायत,
ओ कड़कि उठत :
'अहीं छी रोहिताश्व !'

जकर रोहिताश्व
मारल गेल होइ,
की अहाँ ओकरा
दिआ सकै छी विश्वास
जे अहाँ
रोहिताश्व नहि थिकहुँ ?

1984

देबाल पर नाम

जखन हम किशोर छलहुँ
जतय कतहु भेटल
कोनो खलिया देबाल
खल्ली सँ
लिखि दैत छलहुँ
हम अपन नाम

दोसर दिन देखियै
मेटा देने रहै छल क्यो
एना
जेना लिखबे नहि कयने होइ

तखन हम डपटैत रही
के ?
उत्तर भेटैत छल—
सोमदत्त

हम
बूढ़ भऽ गेल छी
जखन कखनो भेटैछ

कोनो खलिया देवाल
खल्ली सँ
लिखि दैत छी,
अपन नाम

दोसरा दिन देखैत छी
मेटा देलक क्यो
एना
जेना लिखवे नहि कयने होइ

आब जखन डपटैत छी
के ?
उत्तर भेटैत अछि—
काल

1984

117083
9.12.04

Library IIAS, Shimla
MT 811.8 V 59 M
00117083